Mahatma Gandhi Shati Smarak Mahavidyalaya,

Garua Maksoodpur, Ghazipur

Seminar on the Relevance of Shrimad Bhagwat Gita in Our life

महात्मा गांधी शति स्मारक महाविद्यालय गरुआ मकसूदपुर, गाज़ीपुर संस्कृत विभाग के तत्वावधान और अन्य विभागों के सहयोग से महाविद्यालय में छात्रों के लिए एक दिवसीय सेमिनार का आयोजन किया गया। इस सेमिनार की विषय वस्तु "हमारे जीवन में श्रीमद् भगवत् गीता का महत्व" था।

20 नवम्बर, 2019 को संस्क्रत विभाग ने महात्मा गांधी शति स्मारक महाविद्यालय गरुआ मकसूदपुर, गाज़ीपुर में कार्यशाला का शुभारंभ प्राचार्य सुशील तिवारी के अध्यक्षीय भाषण से हुआ।इस कार्यशाला में डा रामरतन जी प्रमुख प्रवक्ता थे।

डा. रामरतन जी ने अपने व्याख्यान में बताया की भारतीय संस्कृति में गीता का स्थान सर्वोच्च है। भारतीय साधुतरह गीता के श्लोक संन्यासियों के अन्तरतम में वीणा की झंकार की- प्रवचनों से लेकर-झंकृत होते हैं। कथाघरसुधार परक उपदेश-घर तक जीवन-, नीतिनियमों का - जो भी ज्ञान दिया जाता है, उसमें गीता का प्रकाश कहीं न कहीं अवश्य पड़ता है। धरती पर शायद ही ऐसा कोई स्थान हो, जो गीता के प्रभाव से मुक्त हो। भारत भूमि तो उसके स्पर्श से धन्य हो गई है। गीता को, धर्म-अध्यात्म समझाने वाला अमोल काव्य कहा जा सकता है। सभी शास्त्रों का सार एक जगह कहीं यदि इकट्ठा मिलता हो, तो वह जगह है-गीता। गीता रूपी ज्ञान-गंगोत्री में स्नान कर अज्ञानी सद्ज्ञान को प्राप्त करता है। पापी पाप-ताप से मुक्त होकर संसार सागर को पार कर जाता है।

गीता को माँ भी कहा गया है। यह इसलिए कि जिस प्रकार माँ अपने बच्चों को प्यार-दुलार देती और सुधार करते हुए महानता के शिखर पर आरूढ़ होने का रास्ता दिखाती है, उसी तरह गीता भी अपना गान करने वाले भक्तों को सुशीतल शांति प्रदान करती है। यह मनुष्यों को सद्शिक्षा देती और नर से नारायण बनने के राह पर अग्रसर होने की प्रेरणा प्रदान करती है। गीता का गान करते-करते मनुष्य उस भावलोक में प्रवेश कर जाता है, जहाँ उसे अलौकिक ज्ञान-प्रकाश, अपरिमित आनन्द प्राप्त होता है। हो भी न कैसे? एक गीता का गान ही अपने आप में इतना सक्षम है कि इसे पाने के बाद और कुछ पाने की जरूरत ही नहीं पड़ती। क्योंकि यह स्वयं भगवान् श्रीकृष्ण के मुख-कमल से ही निःसृत हुई है।

द्वितीय वक्ता श्री रमाशंकर ने भगवद गीता, या गीता, कुरुक्षेत्र युद्ध की शुरुआत से पहले भगवान कृष्ण और अर्जुन के बीच होने वाला प्रवचन है। भगवान कृष्ण की शिक्षाओं ने जीवन के बारे में अर्जुन के दृष्टिकोण और इस प्रकार, उनके जीवन पथ को बदलने में मदद की। जबकि गीता कई सदियों पुरानी है, इसके हर शब्द में निहित तर्क और ज्ञान इसे एक कालातीत मार्गदर्शक बनाते हैं। भगवद गीता के चिरस्थायी मार्गदर्शक सिद्धांतों को समझने से हमें रोजमर्रा की जिंदगी में कैसे और क्यों की गहरी अंतर्दृष्टि प्राप्त करने में मदद मिल सकती है। तो, भगवद गीता पढ़ने के कई फायदे हैं।

इस कार्यशाला का समापन श्री नितेश पांडे द्वारा दिए गए धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

प्राचार्य
महात्मा गांधी शती स्मारक महाविद्यालय
गरूआ, मकसूदपुर-गाजीपुर